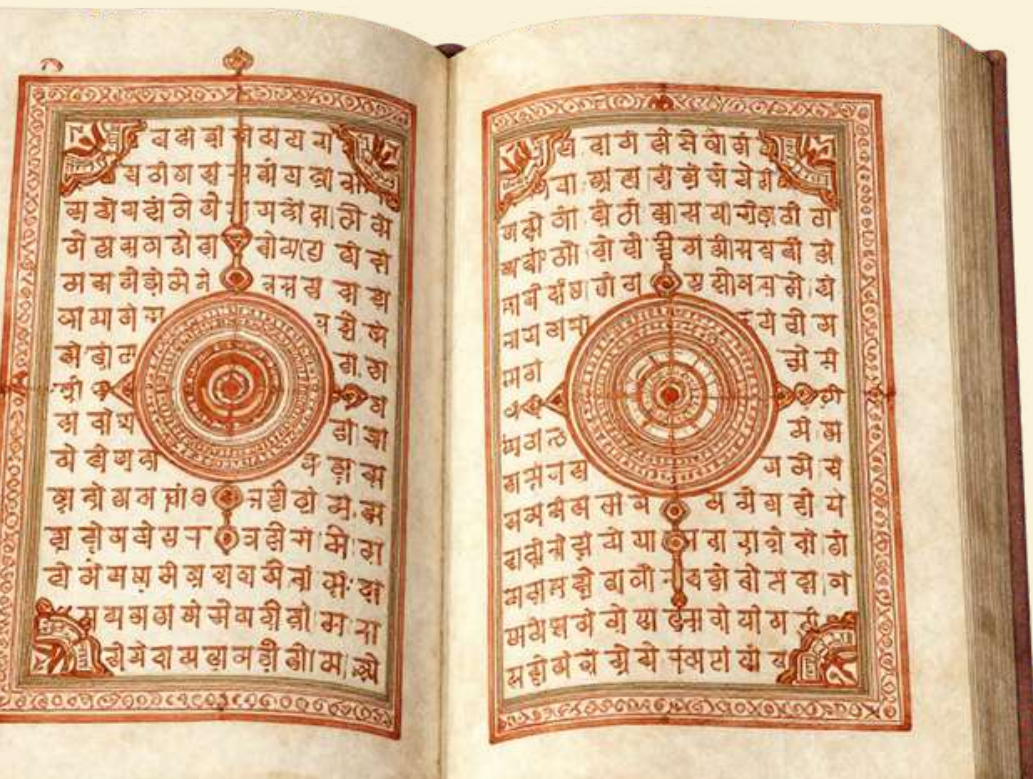


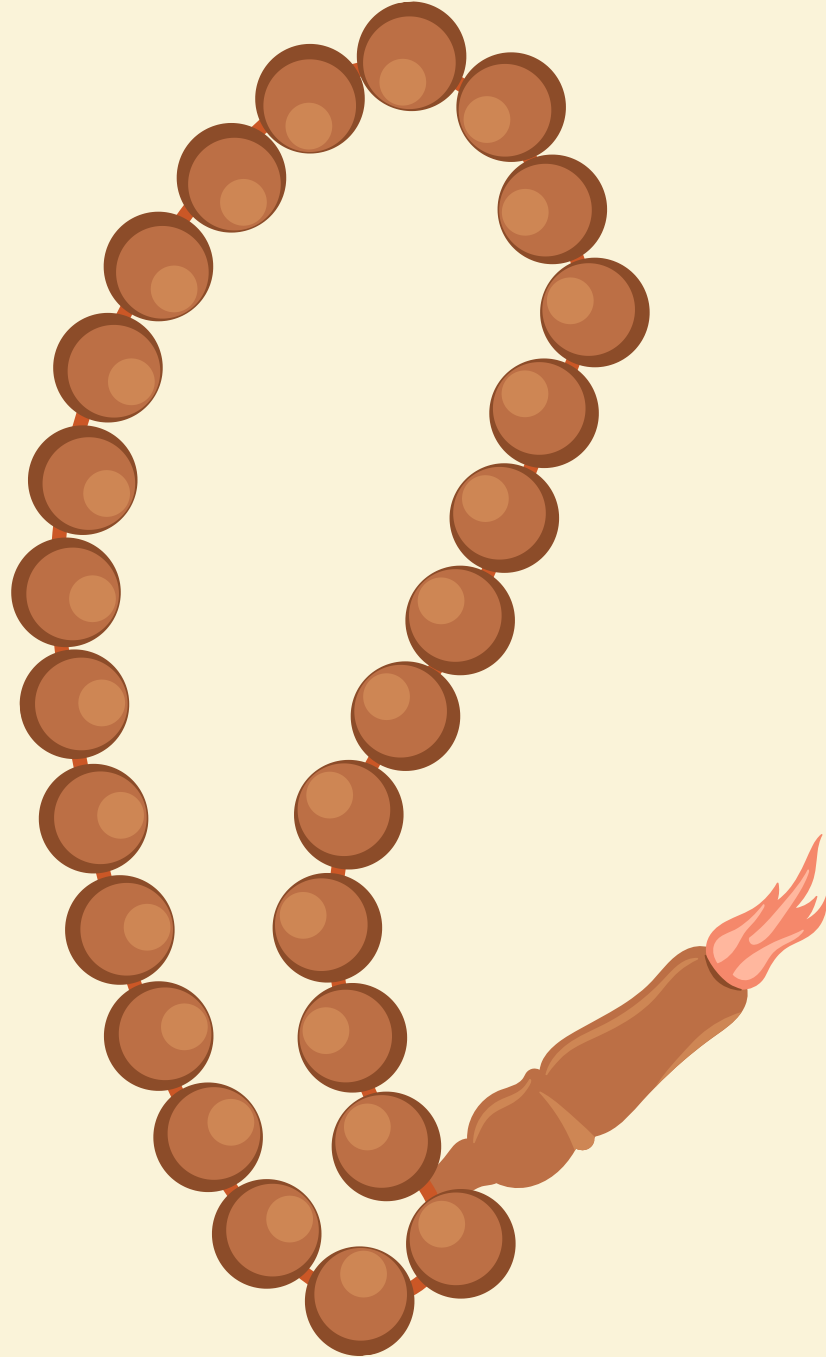
स्मृति श्रृंखला

स्मरण • एकाग्रता • निरंतरता



खेल परिचय..

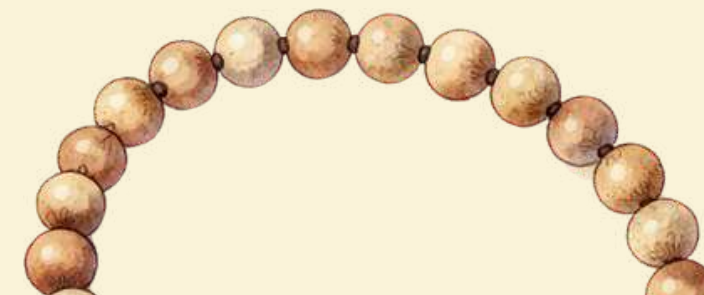
Rounds	Name	What to do ?
● प्रथम	शब्द श्रंखला	जैन धर्म से संबंधित एक शब्द
● द्वितीय	पद/वाक्य श्रंखला	जैन धर्म या दर्शन से संबंधित छोटा पद, वाक्य अथवा कथन
● तृतीय	गाथा/श्लोक/छंद श्रंखला	ग्रंथों से संबंधित गाथा, श्लोक, छंद अथवा सूत्र





नियमावली..

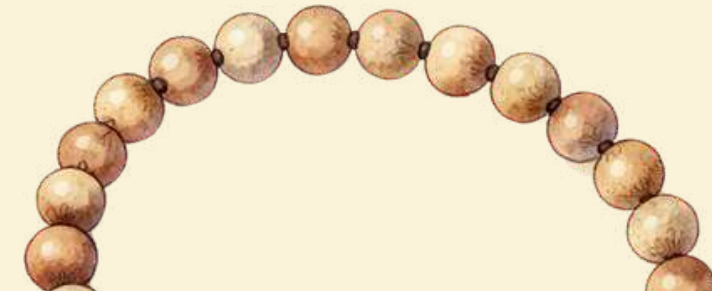
- खेल में 3 चरण होंगे।
- शब्द, वाक्य एवं गाथाएँ संचालक द्वारा प्रदान की जाएँगी। प्रतिभागी अपनी ओर से कोई शब्द, वाक्य या गाथा नहीं जोड़ सकते।
- अपनी बारी पर प्रतिभागी को पूरी श्रृंखला सही क्रम में दोहराकर उसके अंत में एक नया तत्व जोड़ना होगा।
- किसी शब्द, पद या गाथा का क्रम भूलने, गलत बोलने या छोड़ने पर प्रतिभागी उस चरण से बाहर हो जाएगा।
- किसी विवाद की स्थिति में संचालक का निर्णय अंतिम माना जाएगा।





Round 1

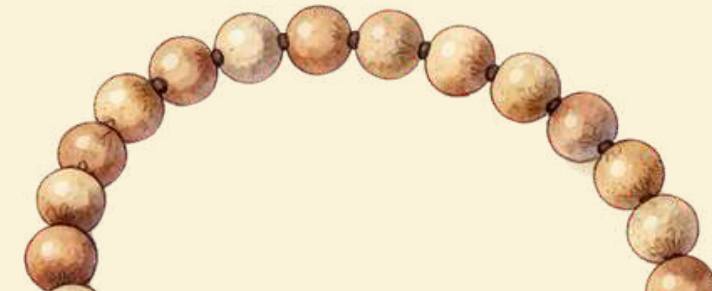
શબ્દ સંખલા..





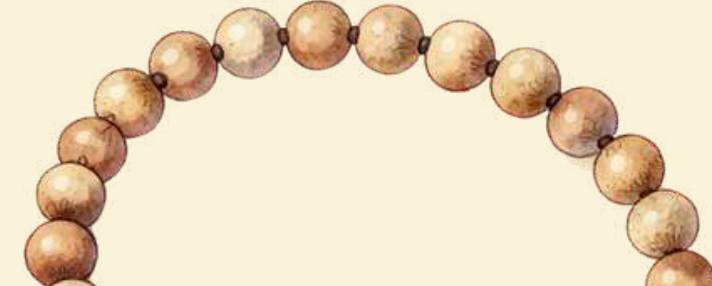
શબ્દ સૂચી..

ઉત્તમ ક્ષમા
ઉત્તમ માર્દવ
ઉત્તમ આર્જવ
ઉત્તમ શૌચ
ઉત્તમ સત્ય





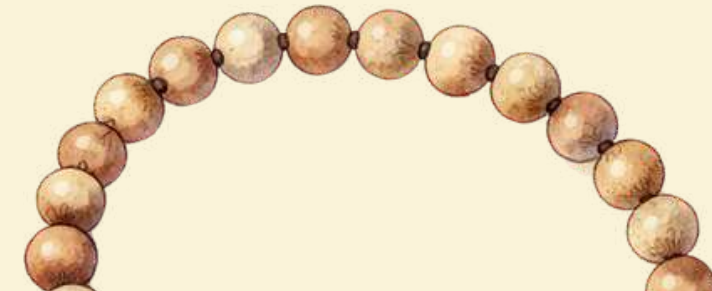
शब्द सूची..
उत्तम संयम
उत्तम तप
उत्तम त्याग
उत्तम आकिंचन्य
उत्तम ब्रह्मचर्य





शब्द सूची..

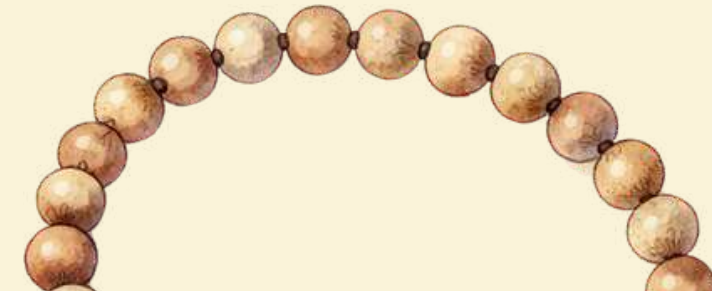
हिंसा
झूठ
चारी
कुशील
परिग्रह





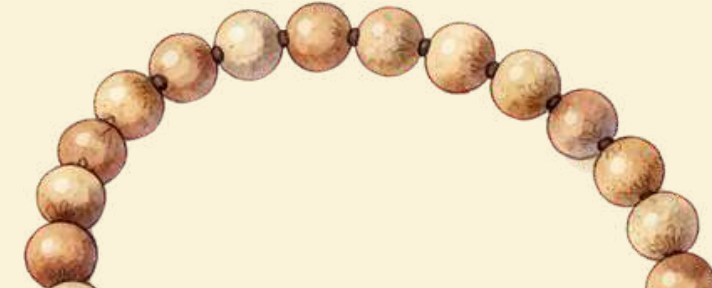
શબ્દ સૂચી..

આદ્વાન
સ્થાપન
સન્નિધિકરણ
પૂજન
વિસર્જન





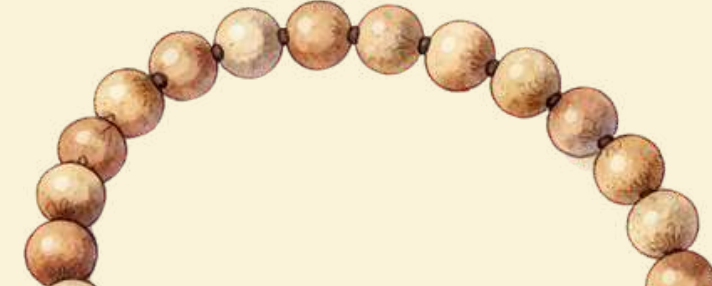
શબ્દ સૂચી.. રચણાસાર લબ્ધિસાર સમયસાર પ્રવચનસાર નિયમસાર





शब्द सूची..

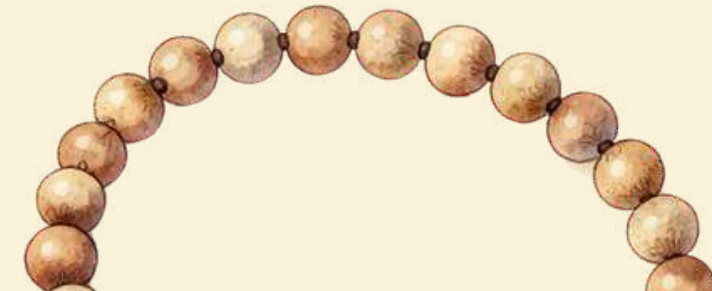
जीव
पुद्गल
अधर्म
आकाश
काल





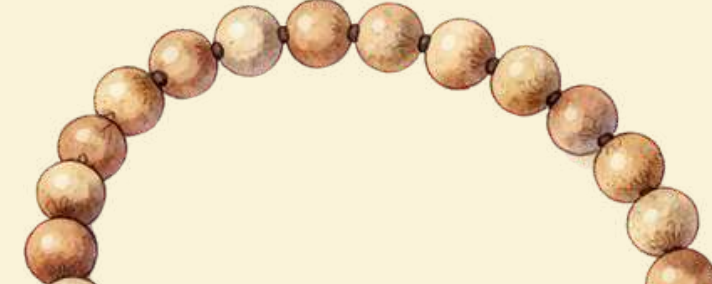
શબ્દ સૂચી..

મહાવ્રત
અણુવ્રત
ગણવ્રત
શિક્ષાવ્રત
દિગ્વ્રત





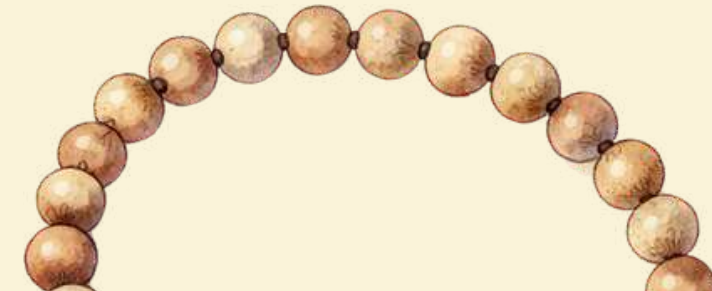
શબ્દ સૂચી..
ઋષભદેવ
અજિતનાથ
ધર્મનાથ
શાંતિનાથ
સુમતિનાથ





शब्द सूची..

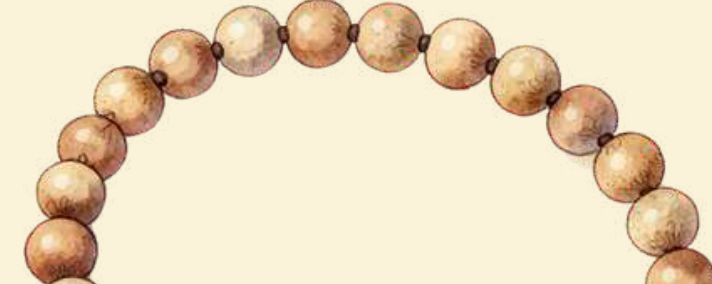
कृष्ण
नील
कापोत
पद्म
शुक्ल





शब्द सूची..

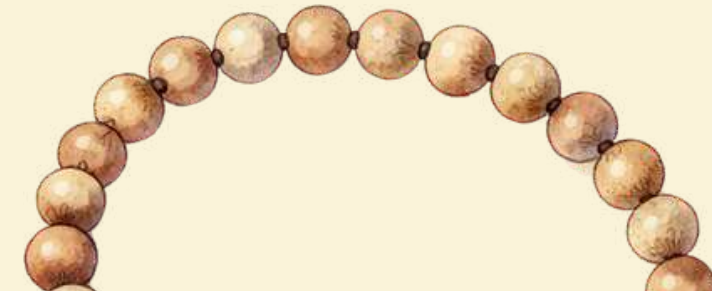
निःकाक्षित
निःशंकित
अमूढदृष्टि
उपगृह्य
स्थितिर्करण





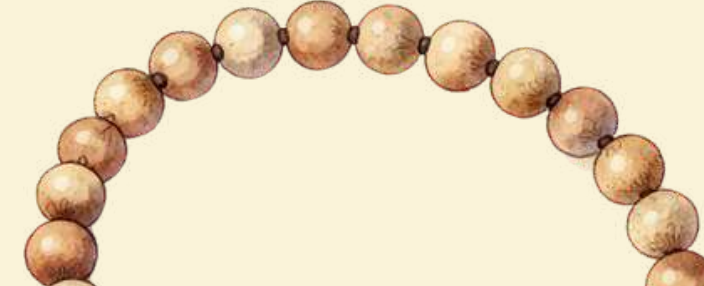
શબ્દ સૂચી..

જીવ
અજીવ
આસ્રવ
બંધ
સંવર



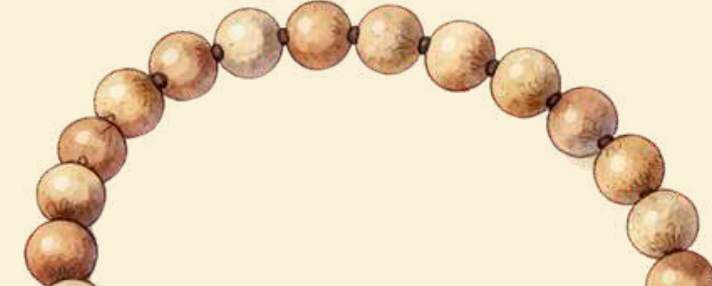


शब्द सूची..
रत्नप्रभा
शर्कराप्रभा
वालुकाप्रभा
पंकप्रभा
धूमप्रभा





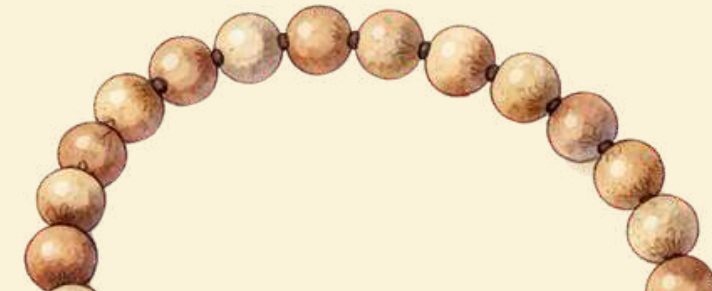
શબ્દ સૂચી..
સૌધર્મ
પ્રાણત
આનત
આરણ
અચ્યુત





Round 2

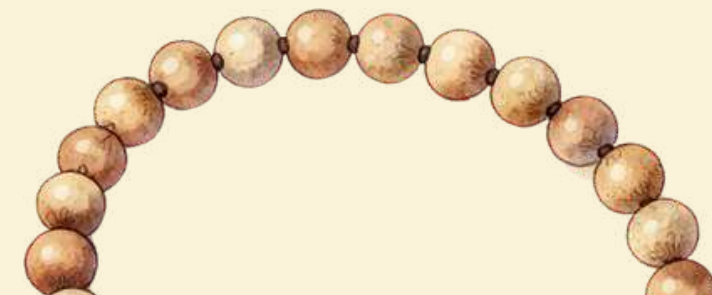
पद/वाक्य शृंखला

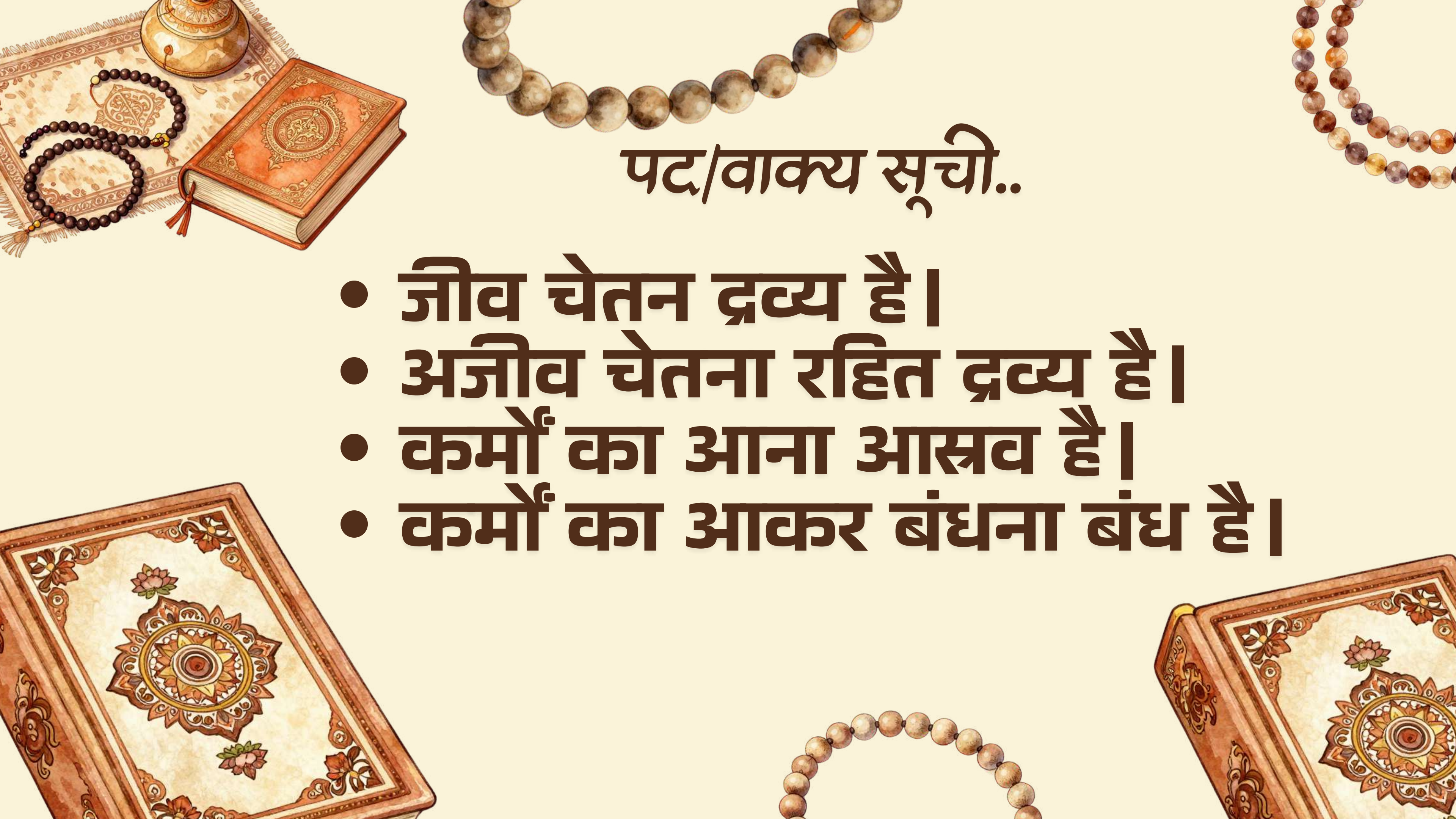




पद/वाक्य सूची..

- क्रोध का अभाव क्षमा है।
- मान का अभाव मर्दव है।
- माया का अभाव आर्जव है।
- लोभ का अभाव शौच है।





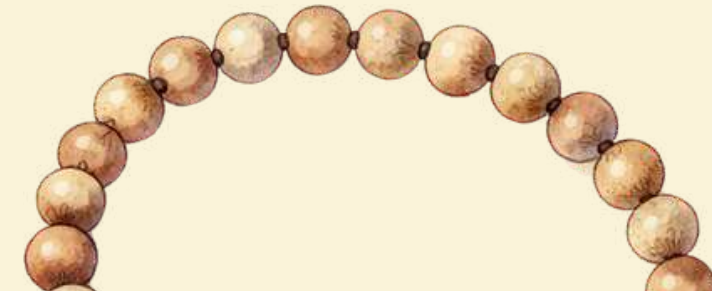
पद/वाक्य सूची..

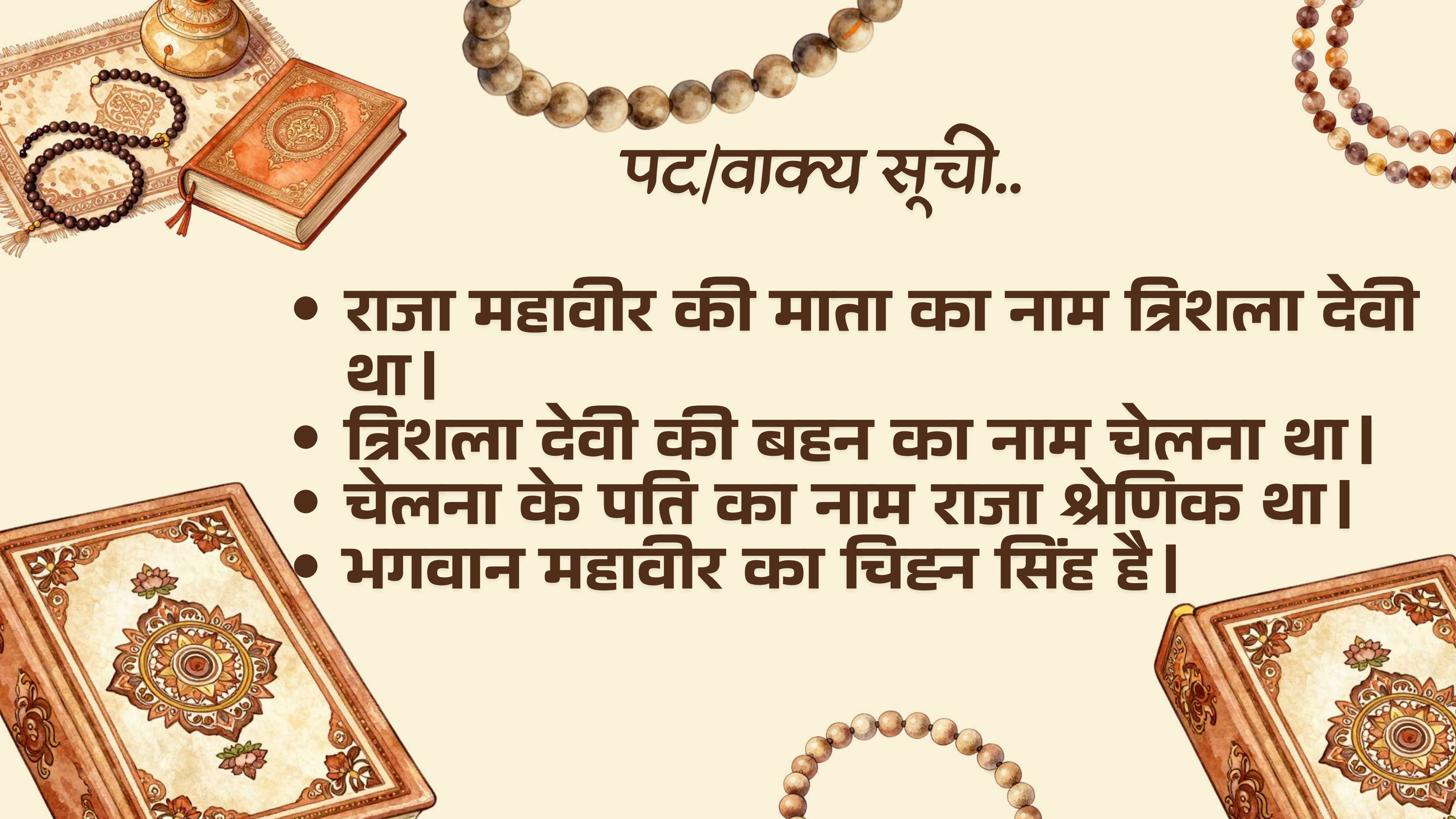
- जीव चेतन द्रव्य है।
- अजीव चेतना रहित द्रव्य है।
- कर्मों का आना आस्रव है।
- कर्मों का आकर बंधना बंध है।



पद/वाक्य सूची..

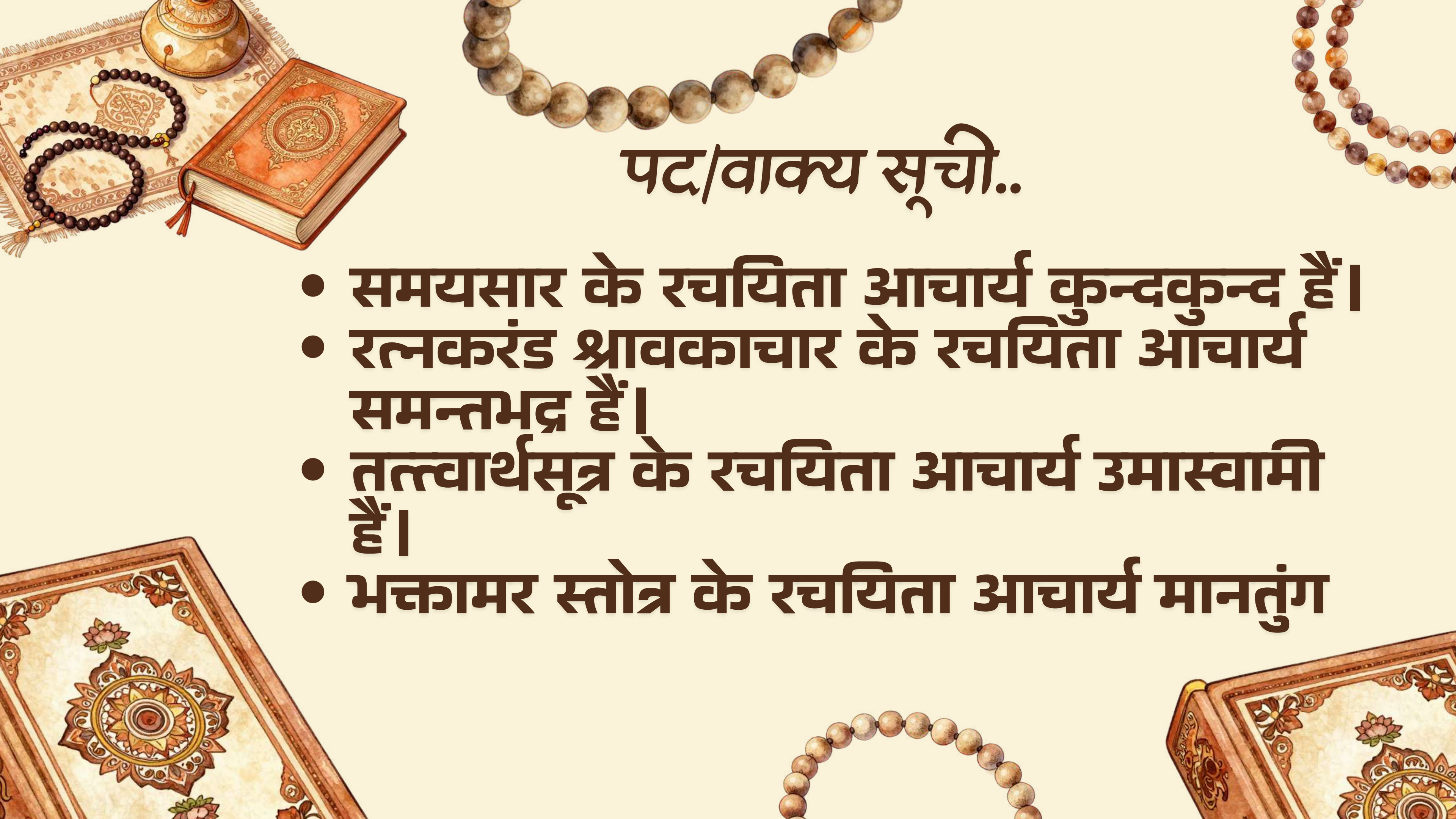
- राजा ऋषभदेव के पिता का नाम नाभिराय था।
- राजा नाभिराय के पिता का नाम मरुदेव था।
- राजा ऋषभदेव की माता का नाम मरुदेवी था।
- राजा नेमिनाथ के पिता का नाम समुद्रविजय था।





पद/वाक्य सूची..

- राजा महावीर की माता का नाम त्रिशला देवी था।
- त्रिशला देवी की बहन का नाम चेलना था।
- चेलना के पति का नाम राजा श्रेणिक था।
- भगवान महावीर का चिह्न सिंह है।



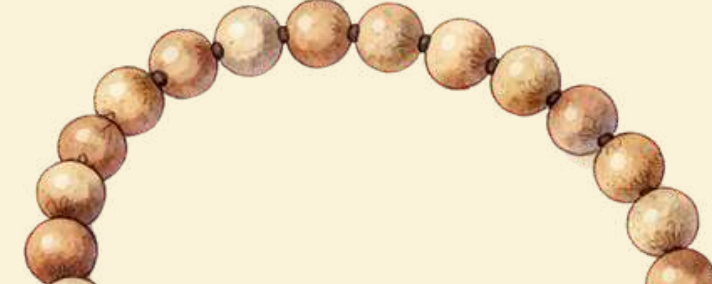
पद/वाक्य सूची..

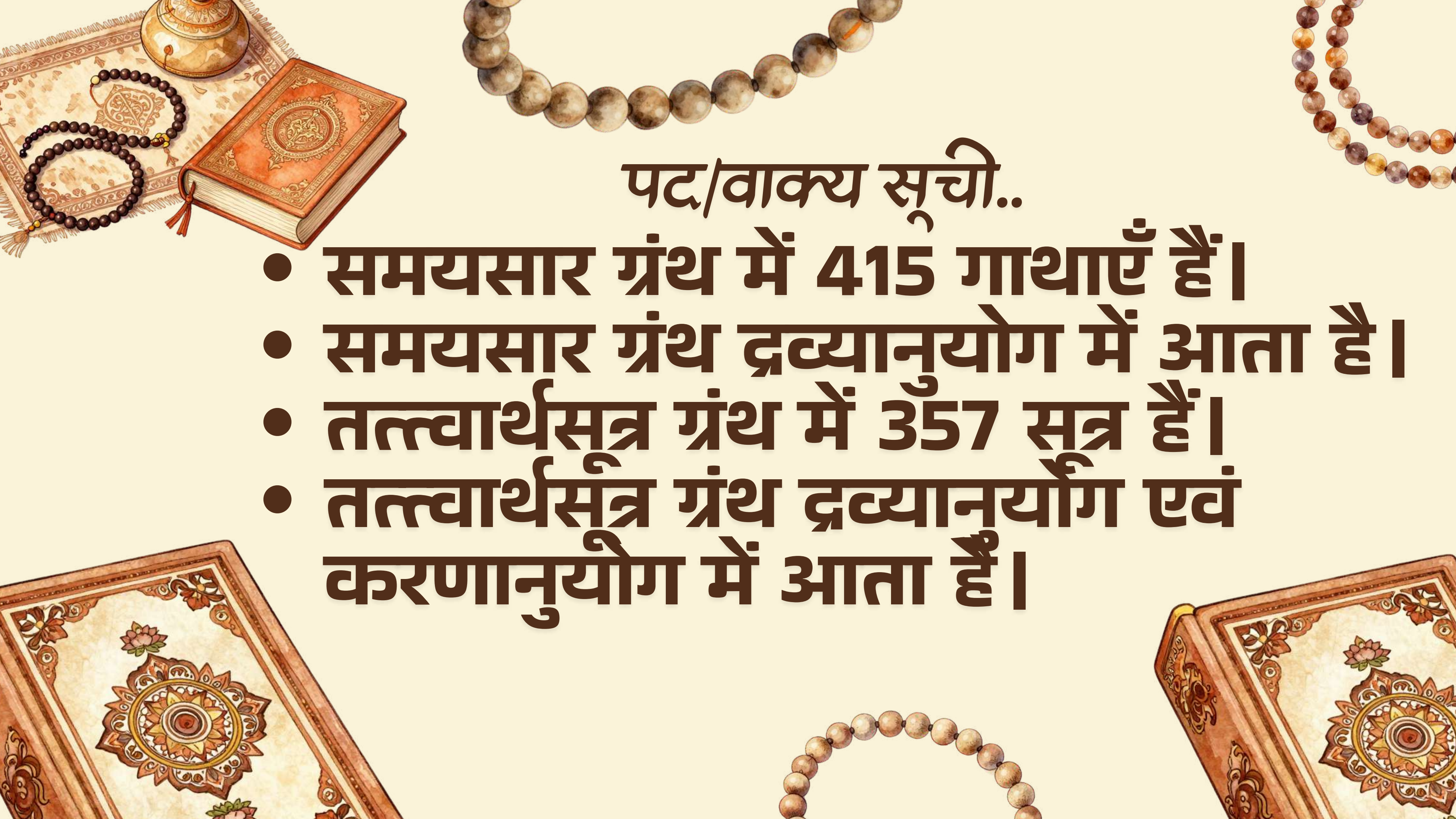
- समयसार के रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द हैं।
- रत्नकरंड श्रावकाचार के रचयिता आचार्य समन्तभद्र हैं।
- तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता आचार्य उमास्वामी हैं।
- भक्तामर स्तोत्र के रचयिता आचार्य मानतुंग



पद/वाक्य सूची..

क्रोध, मान, माया और लोभ चार कषाय हैं।
कषाय कर्मबंधन का प्रमुख कारण हैं।
राग और द्वेष आसक्ति के प्रमुख रूप हैं।
राग और द्वेष कषायों को जन्म देते हैं।





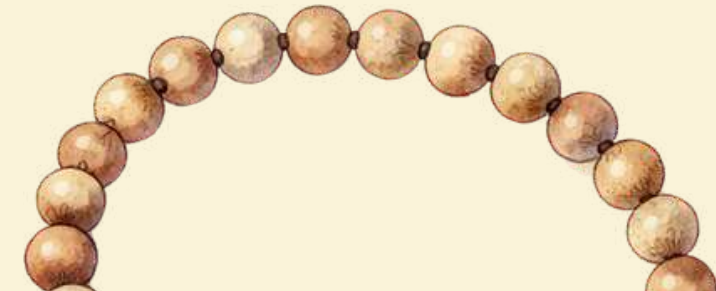
पद/वाक्य सूची..

- समयसार ग्रंथ में 415 गाथाएँ हैं।
- समयसार ग्रंथ द्रव्यानुर्योग में आता है।
- तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ में 357 सूत्र हैं।
- तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ द्रव्यानुर्योग एवं करणानुर्योग में आता है।



Round 3

गाथा/श्लोक/छंद श्रवला

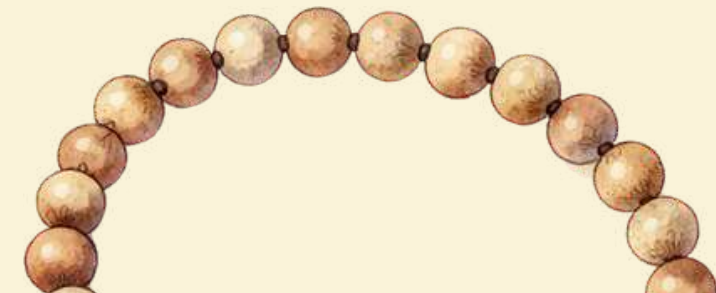




गाथा/श्लोक/छंद

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकासते ।
चित्स्वभावाय भावाय सर्वभावान्तरच्छिदे ॥

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् ।
सम्यक्-प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥

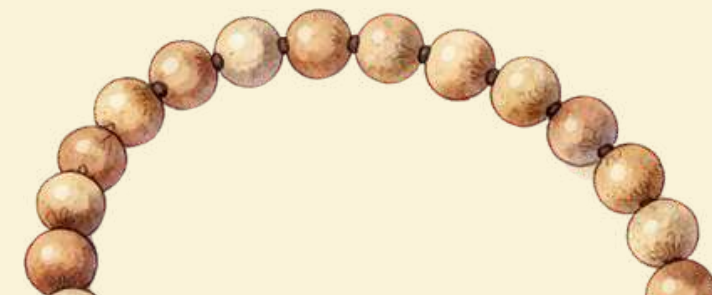




गाथा/श्लोक/छंद

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता ।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहुँ त्रियोग सम्हारिवै ॥

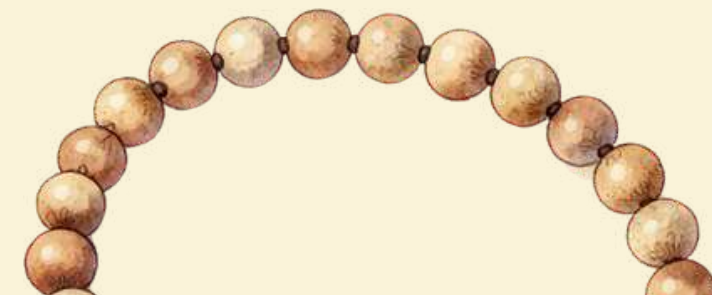




गाथा/श्लोक/छंद

जीवमजीवं दद्वं, जिणवरवसहेण जेण णिद्धुं ।
देविंदविंदवंदं, वंदे तं सव्वदा सिरसा॥

नमः श्रीवर्धमानाय निर्धतकलिलात्मने ।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्या दर्पणायते॥

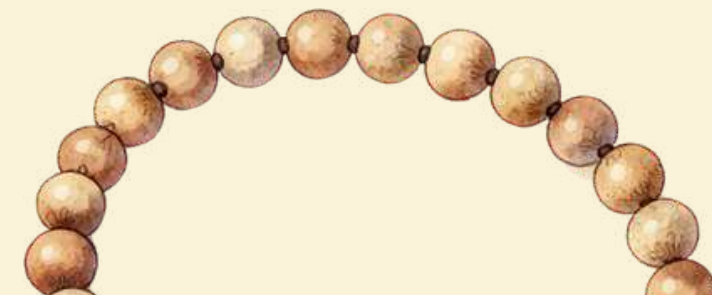




गाथा/श्लोक/छंद

अति पुण्य उदय मम आया, प्रभु तुमरा दर्शन पाया ।
अब तँक तुमको बिन जाने, दुख पाये निज गुण हाने॥

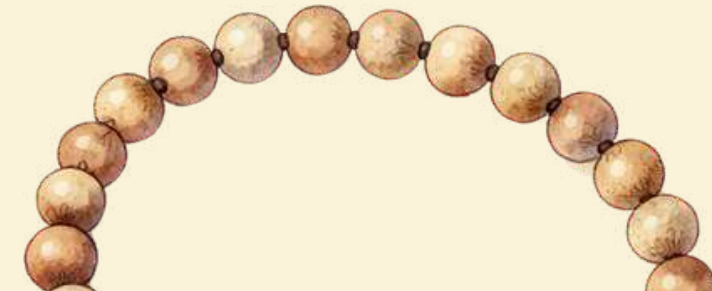
मनि सकलव्रती बडभागी, भवभोगन तैं वैरागी ।
वैराग्य उपावन माई, चिन्तैं अनुप्रेक्षा भाई॥





गाथा/श्लोक/छंद

शचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हर्षाय ।
दौप धूप फल अर्घ सुलैकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊं मन
वच काय ।

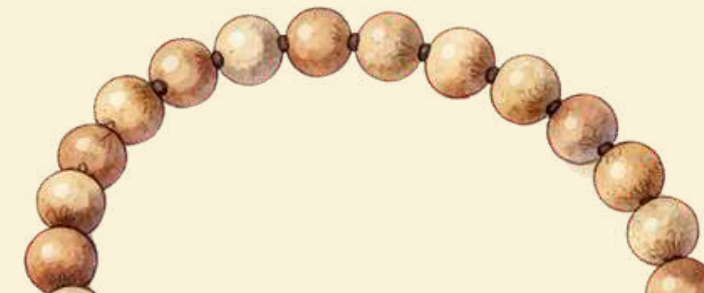




गाथा/श्लोक/छंद

जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहिं।
सो जाणदि अप्पाणं मोहो खँलु जादि तस्स लयं॥

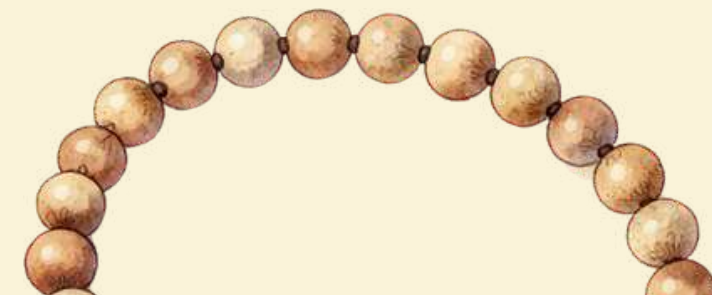
सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः





गाथा/श्लोक/छंद

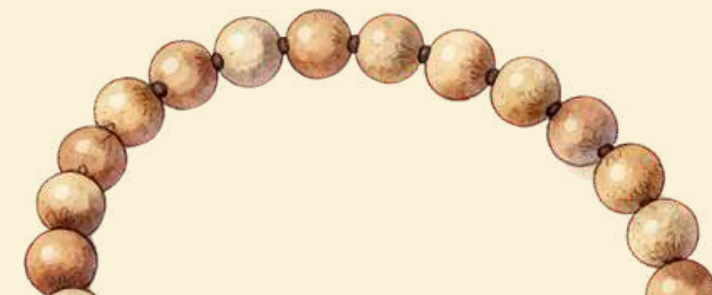
यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समं भान्ति ध्रौव्यव्ययजनि लसन्तोऽन्तरहिताः ।
जगत्साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिव यो
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥





गाथा/श्लोक/छंद

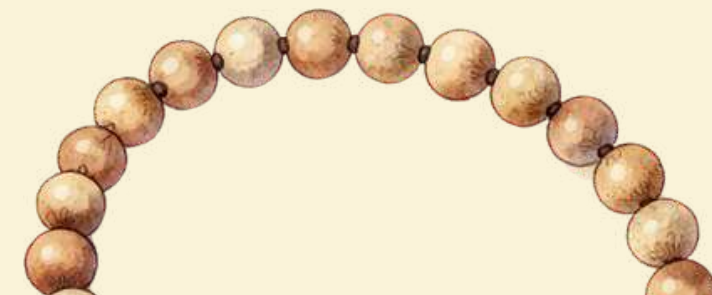
वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गदिं पत्ते ।
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवलीभणिदं ॥





गाथा/श्लोक/छंद

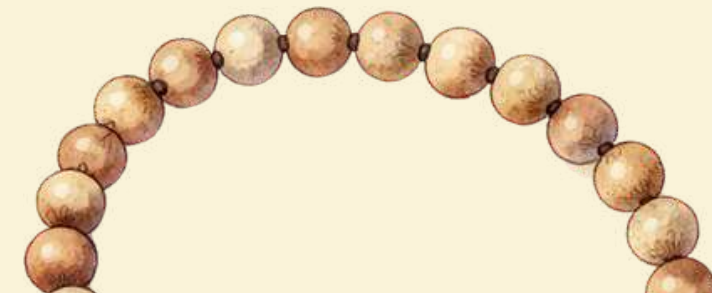
वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिग धारी, आनन्दकरी, दृगप्यारी ।
तुम हो भव तारी, करुणाधारी, या तेँ थारी शरनारी । ।
श्री शान्ति जिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं, दयाऽमृतेशं, मक्रेशं । ।





गाथा/श्लोक/छंद

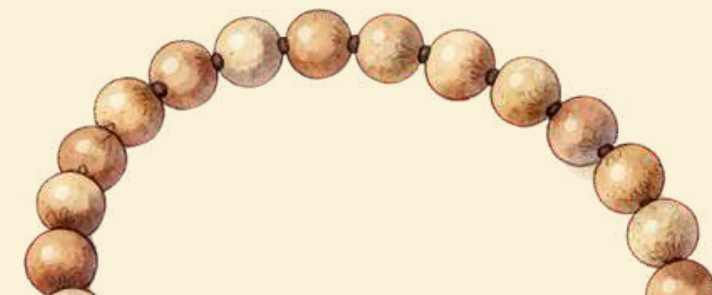
बहु पुण्य-पुंज प्रसंग से शुभ देह मानव का मिला
तो भी अरे! भव चक्र का, फेरा न एक कभी टला





गाथा/श्लोक/छंद

पुण्य भाव से स्वर्गादिक पद, बार-बार पा जाता हूँ
निज अनर्घ्य पद मिला न अब तक, इससे अर्घ्य चढ़ाता हूँ॥
श्री बाहुबलि स्वामी प्रभुवर चरणों में शीश झुकाता हूँ
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ ॥





JAI JINENDRA

Made by - M. Shresth Jain
Shresthjain246@gmail.com

